Volume V, Perspectives - A Peer-Reviewed, Bilingual, Interdisciplinary E-Journal
https://perspectives-jdmc.in/
eISSN – 2583 4762

दिव्यांगों की त्रासदी और कर्मठता को बयां करता कहानी संग्रह "मेरे हिस्से का आसमान"

दीनदयाल

असिस्टेंट प्रोफेसर

हिंदी विभाग, जानकी देवी मेमोरियल कॉलेज

डॉ. दीनदयाल - दिल्ली विश्वविद्यालय से जुड़े विभिन्न कॉलेजों में 24 वर्षों से अध्यापन का कार्य करते हुए, वर्तमान समय में ये जानकी देवी मेमोरियल कॉलेज के हिंदी विभाग में असिस्टेंट प्रोफेसर के रूप में कार्यरत हैं। इनके विभिन्न शोध आलेख भाषा, संवाद पथ, वांग्मय जैसी पत्रिकाओं में प्रकाशित है। जिसमें भारतीय संस्कृति के दर्पण प्रेमचंद, रीतिकालीन नीतिकारों की दृष्टि, हिंदी और भारतीय भाषा का अंतरसंबंध एवं विकास की संभावनाएं, भारतीय संस्कृति के परिदृश्य में प्रेमचंद का साहित्य, अंतरराष्ट्रीय परिदृश्य और हिंदी भाषा, रामधारी सिंह दिनकर के काव्य में सांस्कृतिक राष्ट्रवाद, प्रेमचंद के साहित्य में गांधीवादी चेतना, परंपरागत मीडिया बनाम न्यू मीडिया, अपराधवृद्धि के विकास में हिंदी सिनेमा की भूमिका, गांधी की पत्रकारिता, सामाजिक अभिव्यक्ति में सोशल मीडिया की भूमिका, हरिऔध की लोक हितकारी राधा नवजागरण और भारतेंदुयुगीन पत्रकारिता राम कथा में निहित शिक्षा रामधारी सिंह दिनकर के काव्य में राष्ट्रीय भावना, इंग्लैंड के प्रवासी कवियों की कविताओं का मूल स्वर, राम काव्य परंपरा और आधुनिक रामकाव्य का स्वरूप आदि प्रमुख हैं। इन्होंने 22 पुस्तकों का संपादन और लेखन किया है। इन्हें विभिन्न राष्ट्रीय अंतरराष्ट्रीय सम्मान मिले हैं, जिसमें विश्व हिंदी सेवी सम्मान, विश्व राम संस्कृति सम्मान, मौलाना अबुल कलाम आजाद एक्सीलेंस अवॉर्ड फॉर एजुकेशन, चाणक्य सम्मान, राष्ट्रीय गौरव सम्मान आदि प्रमुख हैं।ईमेल : deendayal@jdm.du.ac.in

दिव्यांगों की त्रासदी और कर्मठता को बयां करता कहानी संग्रह "मेरे हिस्से का आसमान"

साहित्य के गलियारों में उत्तर आधुनिकता के नाम पर विभिन्न विमर्शों की गूंज को सुना जाता है; जिसमें स्त्री विमर्श, दलित विमर्श, वृद्ध विमर्श, किसान विमर्श आदि। इन विमर्शों के माध्यम से उपेक्षित और हाशिए पर रखे समाज के वंचित लोगों के दर्द उनकी पीड़ा की बात की जाती है और उन्हें कहीं ना कहीं मुख्यधारा से जोड़ने का आह्वान भी करती है। इसी क्रम में समाज का एक ऐसा वर्ग जो दैवीय, प्राकृतिक या मानवीय प्रकोप के कारण कहीं ना कहीं शारीरिक अक्षमता, विकलांगता से अपना जीवन जी रहे हैं; उन्हें भी समाज में उच्च स्थान नहीं मिल रहा है। सक्षम वर्ग कहीं ना कहीं उनकी उपेक्षा करता हुआ, सहानुभूति की दृष्टि से देखता हुआ मिलता है। ऐसे दिव्यांगों के लिए भी साहित्य में उचित विमर्श की आज आवश्यकता है। हाशिए पर दिव्यांगों को जिस प्रकार रखकर समाज को एक बोझ माना जा रहा है, यह अत्यंत चिंतनीय प्रश्न है जबकि शारीरिक अक्षमता मानसिक क्षमता के सामने बौनी होती है।

आज दिव्यांगों की पीड़ा समस्या चुनौतियां सबके सामने हैं, ऐसे में इनके संबंध में साहित्यकार, विभिन्न रचनाकार उनके प्रति संवेदनशीलता ही नहीं दिखा रहे अपितु उनके साथ कंधे से कंधा मिलाकर उन्हें समाज का अभिन्न अंग बनाने की बराबर चेष्टा में हैं। इसी प्रयास में एस.जी.एस. सिसोदिया 'निसार' जी द्वारा संपादित पुस्तक "मेरे हिस्से का आसमान" दिव्यांग जीवन पर आधारित एक महत्वपूर्ण कहानी संग्रह हमें दिखाई देता है। प्रकृति के प्रत्येक उपादान पर सबका बराबर का अधिकार है चाहे वह सूर्य की तपिश हो, पानी की ठंडक हो या आसमान

सबको वहां बराबर का अधिकार है; ठीक वैसे ही सक्षम जीवन जीने वालों के बीच उनके बराबर दिव्यांग जनों को उनका आसमान मिले, उनका अधिकार मिले, इसी आवाज को मुखर करता यह कहानी संग्रह अत्यंत प्रभावी रूप में कार्य कर रहा है, जिसमें विभिन्न दिव्यांग पात्रों की काल्पनिक नहीं अपितु यथार्थपरक घटनाओं, जिंदगी के विभिन्न पहलुओं, समस्याओं को इसमें पढ़कर, सीधे जुड़कर जान सकते हैं। पुस्तक के संपादक निसार जी ने स्वयं कहा है कि "सामाजिक दृष्टि से दिव्यांग व्यक्तियों को समाज में सम्मान तथा समानता का अभाव महसूस होता है, उन्हें समाज के कई नियमों और संरचनाओं के अनुसार पूर्ण रूप से समर्थन नहीं मिलता है, जिससे उन्हें प्रतिदिन संघर्ष करना पड़ता है। आर्थिक रूप से बहुत से दिव्यांग व्यक्तियों को रोजगार प्राप्ति में कठिनाई होती है। अक्सर उन्हें उच्च शिक्षा या प्रशिक्षण की स्थिति नहीं मिलती जिससे उनके करियर के अवसर सीमित हो जाते हैं। वे आर्थिक रूप से कमजोर होते हैं और उन्हें सामाजिक सुरक्षा की कमी से गुजरना पड़ता है। सांस्कृतिक दृष्टिकोण से भी दिव्यांग व्यक्तियों को समाज में समान स्थान और समानता महसूस नहीं होती है। वे अक्सर सामाजिक अन्याय तथा असमानता का शिकार होते हैं, जो उनकी सांस्कृतिक आत्महत्या को बढ़ाता है। इस प्रकार दिव्यांगजनों को समाज में अधिक समानता, समर्थकता और समर्थन की आवश्यकता है। सरकार द्वारा दिव्यांग व्यक्तियों को अधिक संचारित कार्यक्रम और योजनाएं प्राप्त करने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए, ताकि वे समाज में सकारात्मक सदस्य बन सके।"

वास्तव में दिव्यांगों के प्रति संवेदनशीलता बढ़ाने और उन्हें समाज का अभिन्न अंग मानने की शिक्षा दी जानी चाहिए। उमंग जौली की "उजली भोर" कहानी की तितली जो अपने नाम के और शरीर के बिल्कुल विपरीत दिखाई देती है। उसकी दिव्यांगता की समस्या को उठाया गया है। तितली यह कैसा नाम रखा था उसकी मां ने तितली जो उड़ने की तो बात छोड़ो आज ना ठीक से कोई काम कर पाती थी ना ठीक से चल पाती थी। बिन पंखों की तितली थी। उसे अपने नाम से चिड़ होती थी। अब तो उसका नाम ही उसकी हंसी उड़ाता दिखता था। तारे ज़मीन पर फिल्म में जिस प्रकार ईशान नामक लड़के को डिस्लेक्सिया की समस्या से ग्रस्त दिखाया गया था, उसी प्रकार की समस्या से ग्रस्त बच्चे अर्णव की कहानी "ऊर्जित भोर" में देखी जा सकती है। जिसकी पेंटिंग देखकर उसकी मां नीता हतप्रभ है। वह अपनी मां से कहता है, " मां शारीरिक व्याधियों इंसान की सफलता के रास्ते बंद नहीं करती; जरूरत है तो बस परिजनों, टीचर्स, कलीग्स और पूरे समाज के पॉजिटिव सपोर्ट की। मैं चाहता हूं कि मेरी ही तरह पढ़ने लिखने की समस्या से ग्रस्त डिस्लेक्सिया पीड़ित बच्चे नॉर्मल बच्चों के साथ ही बिन भेदभाव खेलते कूदते, पढ़ सके और अपनी पसंद, अपने हुनर के हिसाब से अपनी फील्ड में सफलता के झंडे गाढ़ने में कामयाब हो सके। यह बात पूरी दुनिया के सामने साबित करना चाहता हूं कि वह सब अपने आप में समर्थ हैं, समर्थ सक्षम है, काबिल है। इन्हें किसी की दया या सहानुभूति की नहीं बस विश्वास भर साथ की, उनके मनोभावों को समझनेवाले की आवश्यकता है।"

"ट्यूलिप" कहानी में एक ओर व्हील चेयर पर आश्रित मृणाल के दर्द का वृतांत है तो दूसरी ओर उसके जीवन साथी सागर की आजीविका संबंधी समस्या। दोनों के बीच सामंजस्य बनाते हुए किस प्रकार ट्रांसफर में होती देर से सागर को नौकरी छोड़ने का आखिरी विकल्प चुनना पड़ता है। सागर की मेहनत और मीनल की पढ़ाई दोनों आज उनके सपने को मजबूत बना रहे हैं। आभा सिंह की कहानी की शुचिता अपने बड़े भाई किन्शुक की दिव्यंगता से परेशान है। वह कहती है कि "वह बिल्कुल अलग था, ना बोल पाता, ना ठीक से चल पाता, ना कुछ समझता और ना ही कुछ कर पाता। रोता तो बहुत जोर से रोता, हंसता तो बहुत जोर से हंसता। चेहरे पर कोई भाव स्थिर नहीं रहता। उसे देखकर मुझे शर्म आती थी। वह मानसिक अविकसित था, शरीर से तो बड़ा था पर दिमाग से बिल्कुल छोटा था।" इसी प्रकार "शब्द नि:शब्द" कहानी में देव की मां इसलिए परेशान है कि उसका बेटा ना कुछ बोल सकता है, ना कुछ सुन सकता है क्योंकि बचपन में ही एक हादसे में वह अपनी दोनों शक्तियां एक साथ गंवा बैठा था। शारीरिक दिव्यंगता कभी मानसिक हौसलों को नहीं पछाड़ती है, इसलिए "हौसलों की उड़ान" कहानी की सुलभ मुस्कान की पीड़ा को देखकर हतप्रभ है कि किस प्रकार वह दर्द को भी हंसकर पी जाती है जबकि डॉक्टर ने कहा कि "हालत बहुत गंभीर है। नाभि के नीचे का शरीर सुन्न हो गया है और नाभि से ऊपर भी बहुत से फ्रैक्चर है। हिलने या किसी हरकत कर सकने की स्थिति में पूर्ण अक्षम होने का डर है।

दिव्यांगजनों से समाज ही नहीं परिवारजन भी कहीं ना कहीं मुंह मोड़ लेते हैं। इस कटु यथार्थ को "जहां चाह वहां राह" कहानी के कृष्ण के शब्दों में समझ सकते हैं। जब वह सुनीता से कहता है, "सच तो यह है कि मैं अपने घरवालों पर बोझ बनकर रहना नहीं चाहता था। एक एक्सीडेंट में मेरे पैर खराब हो गए,

जिसके कारण मैंने घर छोड़ने का फैसला कर लिया था। दिवयांगजनों की समस्याओं के विभिन्न रूप इस कहानी संग्रह में संकलित है। "इम्तिहान" कहानी की सोनाली जो 28 वर्ष की विकसित युवती थी। मोतियों जैसे दांत, बड़ी-बड़ी आंखें, तीखे नयन नक्श: किंतु बचपन में पीलिया के घात से उसके नर्वस सिस्टम में गड़बड़ी आ गई थी, जिसके कारण उसके हाथ पैर काबू में नहीं रहे। वह न बिना किसी की मदद के खाए, ना बोल पाए, ना चल पाए। चलते समय शरीर एक और झुक जाता। स्पष्ट स्वर की बोली घर वाले तो समझ लेते किंतु बाकी लोगों के पल्ले कुछ ना पड़ता। लोगों की नकारात्मक प्रतिक्रिया के कारण न सोनाली को कोई घर से बाहर ले जाना चाहता, ना छोटी बहन दीपाली अपने किसी भी दोस्तों को अब अपने घर पर लाती थी।

वस्तुत: अपने हौसलों और ज्ञान के बल पर दिव्यांगजनों ने अपना मुकाम खुद बनाया है। "अंतिम परीक्षा" कहानी के नायक ब्रेल लिपि के जनक लुई ब्रेल की संघर्ष गाथा आप देख सकते हैं। वहीं रोहन और रेवती को उनकी उड़न परी के बारे में जब उन्हें पता लगता है कि हमारी बच्ची सुन नहीं सकती तो उन्हें गहरा सदमा लगता है। डॉक्टर ने बताया कि गर्भावस्था में गहरे तनाव से ही बच्ची की ग्रोथ पर असर पड़ा है। यह सुनकर रेवती के पैरों के नीचे से किसी ने मानो जमीन ही खींच ली थी। पहले शादी के फैसले को लेकर परेशान थी, अब इतनी प्यारी बिटिया तो दी भगवान ने परंतु मूक और बधिर। जब सुनाई ही नहीं देगा तो बोलेगी कैसे। वह कहती है, "जिसे उसने परवाज भरने को खुला आसमान देना था उसे तो प्रभु ने अपंगता के पिंजरे में बंद कर दिया।" दिव्यांगता किस प्रकार किसी माता-पिता के सपनों को, सुख को दुखद स्थिति में परिवर्तित कर सकती है, इसका यहां संकेत है; किंतु वही उड़न परी जब

अपने कर्मठ भाव से राष्ट्रीय खेल प्रतियोगिताओं में गोल्ड मेडल जीती है तो सही मायने में दिव्यांगता को मुंह चिढ़ाते हुए उड़न परी कहलाती है।

आंखों से ना दिखाई दे सकने पर भी दिव्यांगजनों की शक्ति क्षीण नहीं होती है। "नए कलेवर में रंग" कहानी का राजू हंसते हुए कहता है कि "मैं अपने दोस्तों की हंसी सुनता हूं, बगीचे में फूल खिलते हैं, रंग-बिरंगे नीले पीले हरे उसको महसूस करता हूं। घर में जब मां मुझे डांटती है तो उसके चेहरे का क्रोध का भाव भी जानता हूं और जब वह मन में मेरे लिए स्नेह रखती है तो उसे भी महसूस करता हूं।" स्वार्थ के वशीभूत होकर कभी-कभी पारिवारिक संबंध ही दिव्यांगजनों के साथ कुचक्र रच देते हैं। ऐसा ही "कुचक्र" कहानी में देखा जा सकता है। जब महेश का छोटा दिव्यांग भाई ब्याह रचाने की बात करता है, तब महेश की पत्नी किस प्रकार षड्यंत्र रचते हुए महेश से कहती है कि "जरा सोचो, जब इसके बच्चे होंगे। इसका मतलब समझते हो, आधी खेती और घर तो हमारे हाथ से निकल जाएगा। साथ ही हर माह आधी तनख्वाह आती है ना वह भी नहीं मिलेगी। प्रेरणा की बात सुनकर महेश चकित रह जाता है कि औरतें कितनी स्वार्थी होती हैं। बात यहीं खत्म नहीं होती। महेश के न मानने पर प्रेरणा अपने देवर के साथ शारीरिक संबंध बनाने का कुचक्र रचती है। इस प्रकार यह कहानी संबंधों और मूल्यों को ध्वस्त होते हुए दिखाती है। कुछ परिवारों में तो दिव्यांग बच्चों की मां ही बच्चों की दुश्मन बनती दिखाई देती है। "सो से समथिंग" कहानी में अबीर की मां अबीर को नजरबट्टू कहती है, "पता नहीं हमारे किस पाप की सजा है यह मंदबुद्धि लड़का। इससे कब और कैसे पिंड छूटेगा हमारा। अबीर अपनी काउंसलर से स्पष्ट शब्दों में कहता है कि "घर में सब कहते हैं कि मैं बेकार, नकारा, निखत फालतू या पनौती हूं। वे कहते हैं या

तो मर जा या घर से कहीं चले जा। मम्मी कहती है, अनाथ आश्रम में भेज दो। मैं ऐसा ही हूं ना, बेकार, निकम्मा इसलिए पापा और भाई लातों से मारते हैं।"

"मेरी पहचान" कहानी में विनीता एक विशेष शिक्षक थी और पहचान बौद्धिक रूप से विकलांग युवाओं को उनकी पहचान देता था। विनीता सोचती है कि शरीर शारीरिक रूप से सक्षम होना एक उच्च बौद्धिक स्तर का होना भावनात्मक रूप से मजबूत और समाज में व्यावहारिक होना ही एक अच्छे इंसान की पहचान नहीं होती है। कुछ मां अपने दिव्यांग बच्चों के लिए स्पेशल मां बन जाती है। जैसे नितिन की मां। जिसका बच्चा डाउन सिंड्रोम बीमारी का शिकार है और उसकी मांसपेशियां बहुत ही कमजोर हैं। यह बड़ा होकर चल फिर नहीं पाएगा यह सुनना उसके लिए बहुत कठिन था पर उसने अपने बच्चों की बहुत अच्छे से परवरिश की। "वह हारा नहीं" कहानी का नीलांजन ट्रेन के पहियों के नीचे अपनी टांगे गंवा बैठता है लेकिन उसके हौसले बुलंद होते हैं। वह अनाथालय में पलकर बड़ा होता है। हां समाज प्रत्येक दृष्टिहीन को सूरदास का नाम दे देता है, उसे भी सूरदास का नाम दे दिया लेकिन उसने फर्नीचर बनाने का श्रम कर अपना समाज में स्थान बनाया। इसी प्रकार "ध्रुव तारा कभी अस्त नहीं होता" कहानी की तारा भी समाज से उपेक्षित रहती है लेकिन अपनी ऊर्जा शक्ति से डॉक्टरेट करती है और लेक्चर बनती है। वह सरिता से अपनी पीड़ा कहती है, "सरिता जी साइटेड व्यक्ति निर्दयतापूर्वक ब्लाइंड्स का शोषण करते पाए जाते हैं। ऐसा मैंने खूब देखा है। कई बार उनकी संवेदनशीलता भी एक लौकिक दिखावा होती है। वह तो खुद के लिए वाहवाही कमा रहे होते हैं। मुझे भी मेरे गाइड की पत्नी ताना मारती थी कि कुछ

गाना बजाना सीख लो भविष्य में कैसे खाना खाओगी। खैर तुम लोगों का तो जॉब में कोटा होता है। ऐसे शब्द लगातार चुभते थे।"

"तुम आओगे" कहानी की सुहासी हो, अपराजिता या अमीश के पापा का दर्द सबकी एक ही दुखद कहानी है। दिव्यांग चाहे अपनी मेहनत से कितना ही बड़ा मुकाम क्यों न हासिल कर ले लेकिन सकलांग समाज उसपर अनेक सवाल दागता रहता है। जैसे "दुनिया करे सवाल" कहानी के पात्र से रेल में अनेक सवाल दागे जाते हैं कि आपको तो रेल के भाड़े में रियायत मिलती होगी? आपको नौकरी पाना कौन सा मुश्किल काम है। आपकी तो रिजर्वेशन की माया है। आपका तो बैंकों में सारे दिन नोटों से पाला पड़ता होगा, कैसे पहचानते होंगे? आपने कौन से अटेम्प्ट में परीक्षा पास की? आदि। ऐसे सवाल सुनकर उन विकलांगों को सकलांग भी सही मायने में विकलांग जान पड़ते हैं। यही नहीं, परिवार की उपेक्षा से ग्रस्त स्त्री कैसे विकलांगता को गले लगाती है। रेल के सामने आत्महत्या जैसा कमजोर कदम उठाती है। इसका भी उल्लेख कहानी संग्रह की अंतिम कहानी "गोल्डन गर्ल" कहानी में देख जा सकता है। अंत में वही दिव्यांग लड़की अपने मेहनत से गोल्डन गर्ल सोना साहनी के नाम से जानी जाती है।

इस प्रकार यह कहानी संग्रह दिव्यांगजनों की समाज में वास्तविक स्थिति का बोध कराता है। उनकी विभिन्न समस्याओं, पीड़ा और संघर्ष के साथ-साथ उनके मजबूत हौंसलों को भी दर्शाता है। शारीरिक रूप की अक्षमता के कारण समाज में मानवीय भेदभाव नहीं होना चाहिए। सभी को उनके हिस्से का आसमान मिलना चाहिए अर्थात बराबर का हक, उनका अधिकार होना चाहिए। यही आह्वान यह कहानी संग्रह बार-बार करता दिखता है।